रोसी ली की तलाश में

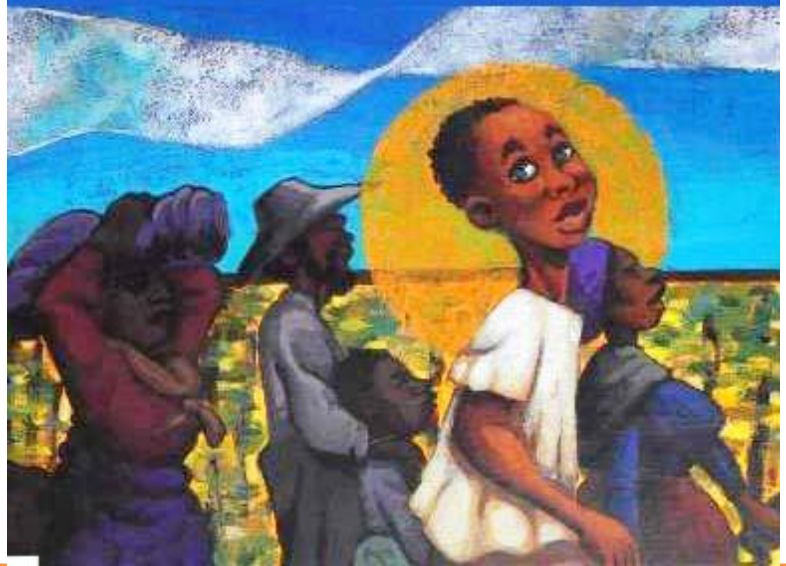

रोसी ली की तलाश में

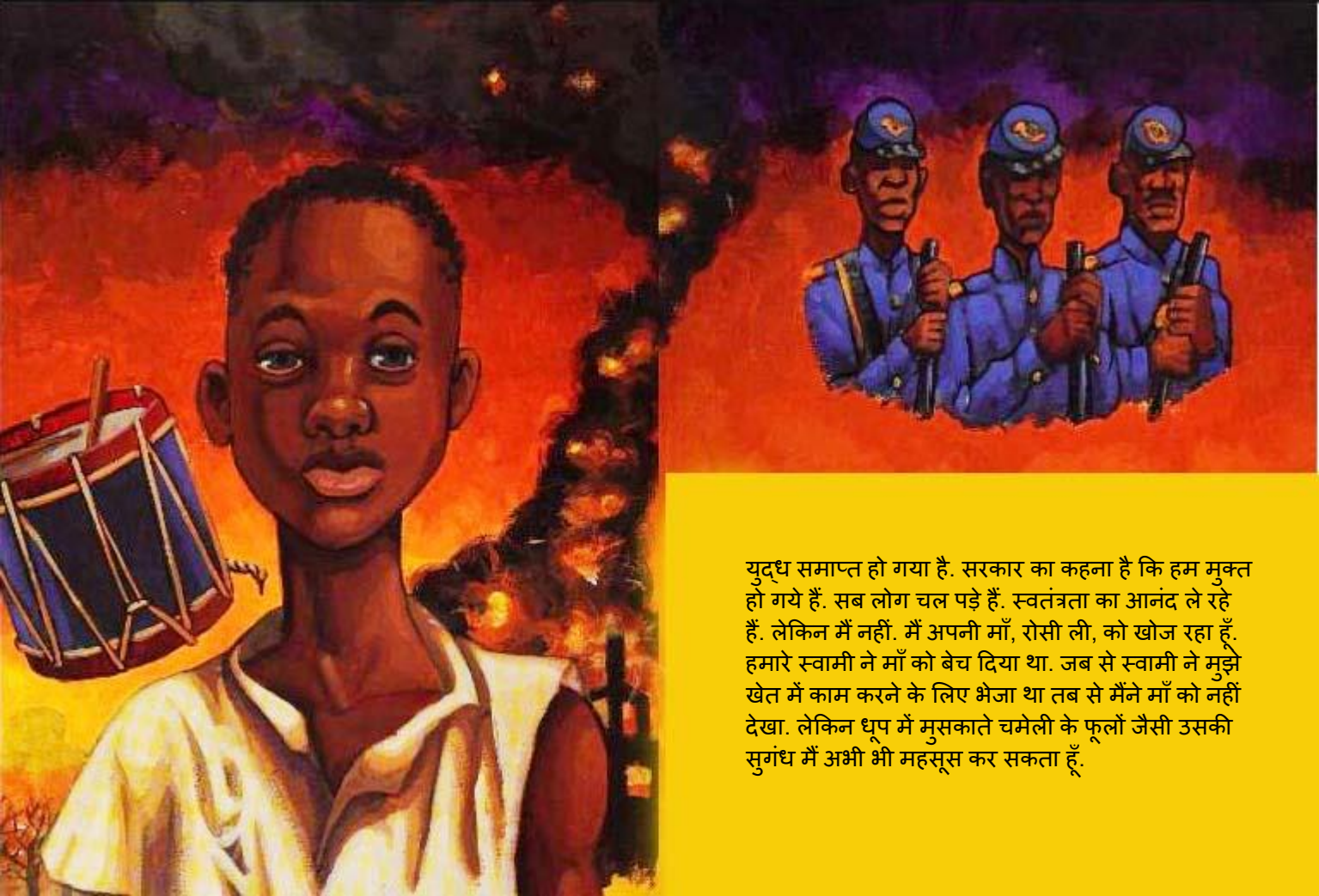

युद्ध समाप्त हो गया है. सरकार का कहना है कि हम मुक्त हो गये हैं. सब लोग चल पड़े हैं. स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं. लेकिन मैं नहीं. मैं अपनी माँ, रोसी ली, को खोज रहा हूँ. हमारे स्वामी ने माँ को बेच दिया था. जब से स्वामी ने मुझे खेत में काम करने के लिए भेजा था तब से मैंने माँ को नहीं देखा. लेकिन धूप में मुसकाते चमेली के फूलों जैसी उसकी सुगंध मैं अभी भी महसूस कर सकता हूँ.

सड़क पर चल रहे इन लोगों के समान, माँ भी शायद स्वतंत्रता की ओर कहीं चल रही होगी. गीत गाते हुए, कहानियाँ सुनाते हुए और अपने भविष्य के सपने देखते हुए यह लोग सारा दिन चलते हैं. मिस्टर गैरी रेल की पटरियां लगाने का काम करना चाहता है.

येंसी अपने तीन भाइयों को ढूँढ़ रहा है, जिनके बारे में वह हमेशा मुझे कुछ न कुछ बताता रहता है. मिस शेरोना किसी ऐसे स्कूल में अध्यापक बनना चाहती है जो कपास के पौधों की तरह हर उस जगह उगने लगे हैं जहाँ एक चाक बोर्ड लगाया जा सकता है और हाथ में किताब लेकर कोई बैठ सकता है.

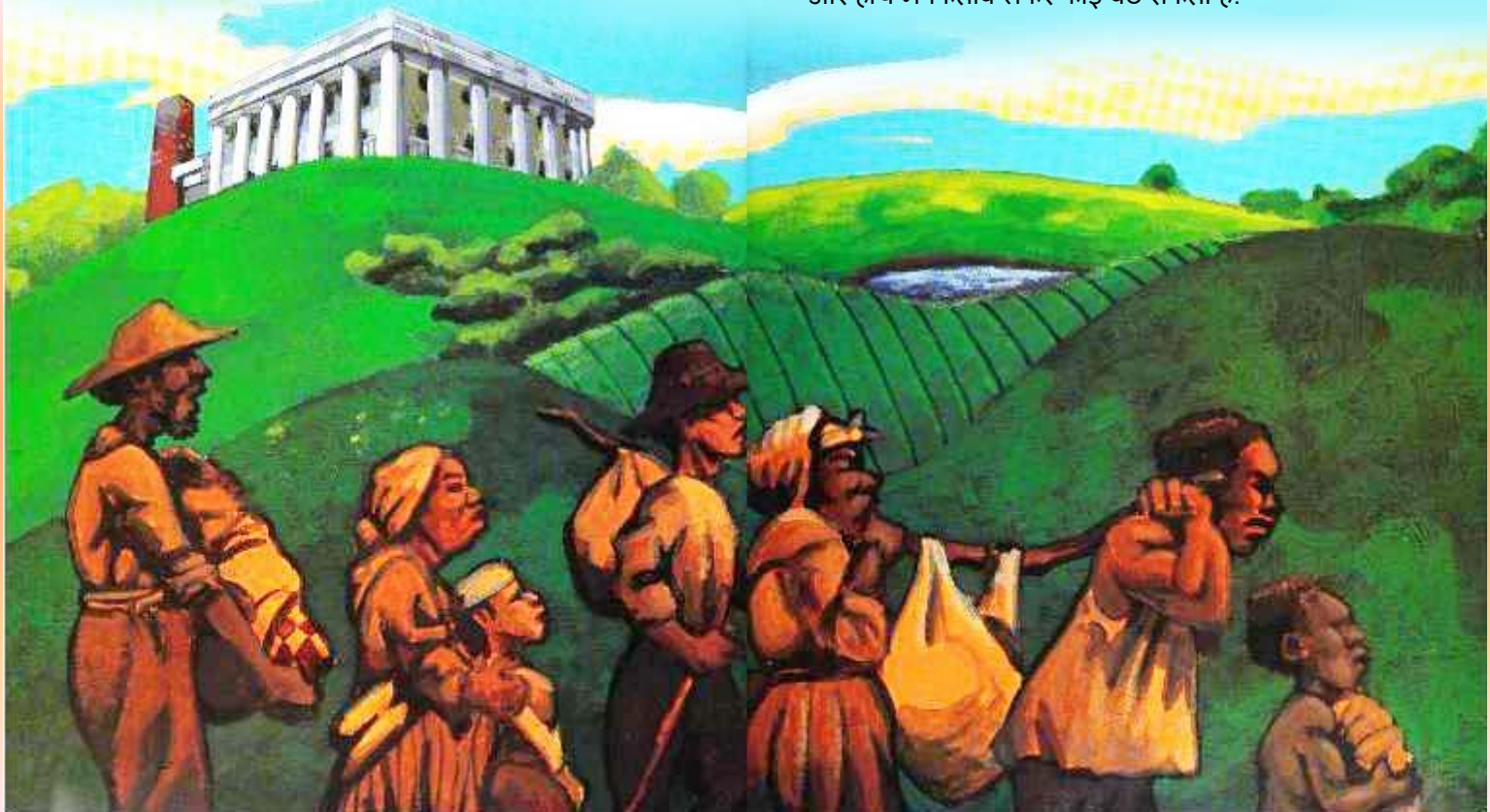

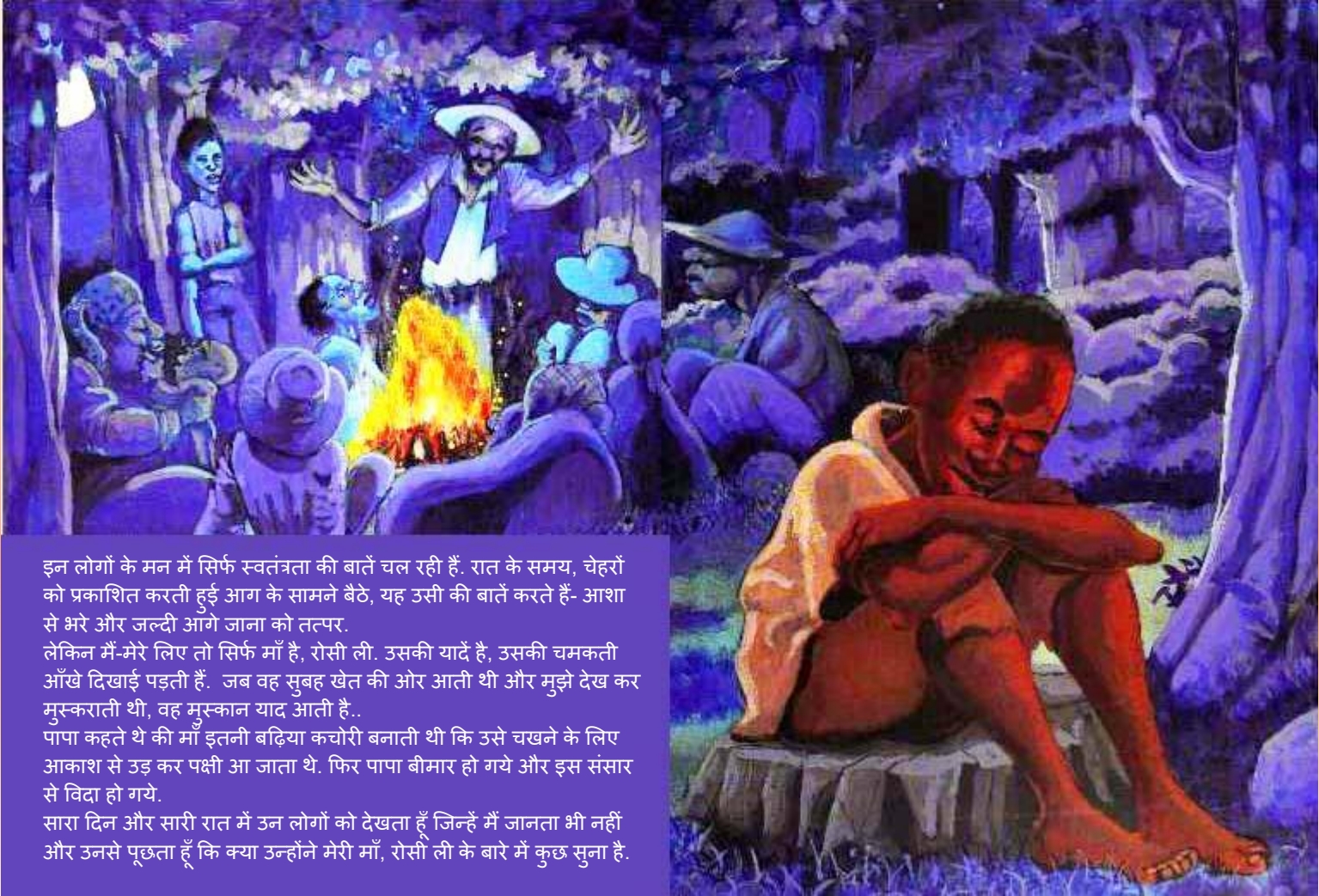

इन लोगों के मन में सिर्फ स्वतंत्रता की बातें चल रही हैं. रात के समय, चेहरों को प्रकाशित करती हुई आग के सामने बैठे, यह उसी की बातें करते हैं- आशा से भरे और जल्दी आगे जाना को तत्पर.

लेकिन मैं-मेरे लिए तो सिर्फ माँ है, रोसी ली. उसकी यादें है, उसकी चमकती आँखे दिखाई पड़ती हैं. जब वह सुबह खेत की ओर आती थी और मुझे देख कर मुस्कराती थी, वह मुस्कान याद आती है..

पापा कहते थे की माँ इतनी बढ़िया कचोरी बनाती थी कि उसे चखने के लिए आकाश से उड़ कर पक्षी आ जाता थे. फिर पापा बीमार हो गये और इस संसार से विदा हो गये.

सारा दिन और सारी रात में उन लोगों को देखता हूँ जिन्हें मैं जानता भी नहीं और उनसे पूछता हूँ कि क्या उन्होंने मेरी माँ, रोसी ली के बारे में कुछ सुना है.

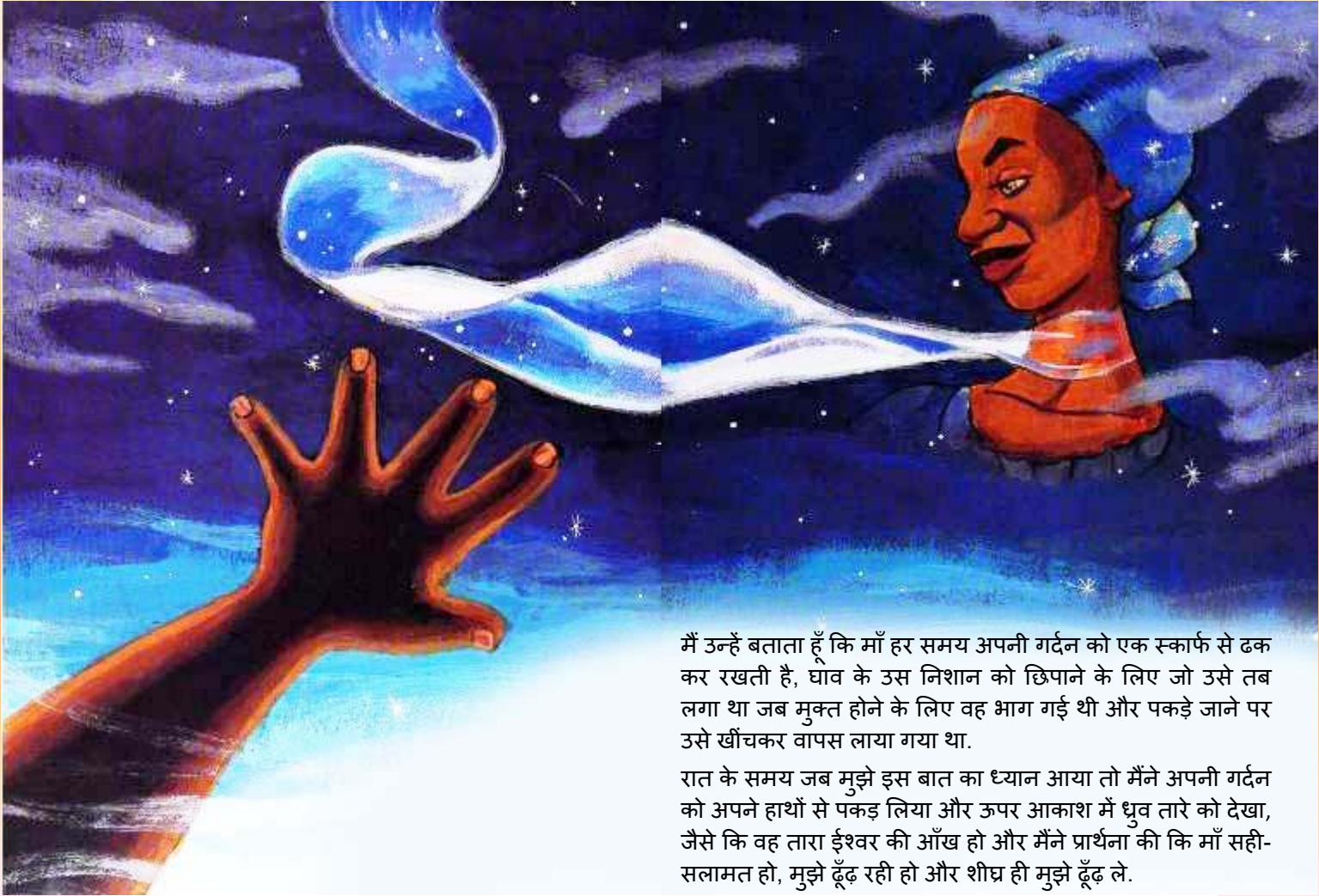

मैं उन्हें बताता हूँ कि माँ हर समय अपनी गर्दन को एक स्कार्फ से ढक कर रखती है, घाव के उस निशान को छिपाने के लिए जो उसे तब लगा था जब मुक्त होने के लिए वह भाग गई थी और पकड़े जाने पर उसे खींचकर वापस लाया गया था.

रात के समय जब मुझे इस बात का ध्यान आया तो मैंने अपनी गर्दन को अपने हाथों से पकड़ लिया और ऊपर आकाश में ध्रुव तारे को देखा, जैसे कि वह तारा ईश्वर की आँख हो और मैंने प्रार्थना की कि माँ सही-सलामत हो, मुझे ढूँढ़ रही हो और शीघ्र ही मुझे ढूँढ़ ले.

सुबह होते ही लोग चलने लगते हैं-गीत गाते हुए, कहानियाँ सुनाते हुए और स्वतंत्रता में अपना जीवन किस प्रकार बिताएंगे उसके सपने देखते और सुनाते हुए. और मैं उनके पीछे चल रहा हूँ, लेकिन मेरी आँखें माँ को ढूँढ़ रही हैं.

दिन बीते, सप्ताह बीते. एक दिन जैसे ही अँधियारा हुआ, मैंने एक औरत को देखा जिसने अपनी गर्दन पर एक पीला स्कार्फ लपेट रखा था. मैंने भाग कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "माँ?"

लेकिन जब उसने मेरी ओर देखा तो उसकी आँखें माँ जैसी न थीं. उसने एक हाथ में एक छोटे बच्चे को उठा रखा था. उसने कहा, "बेटा, तुम्हारी माँ कौन है?"

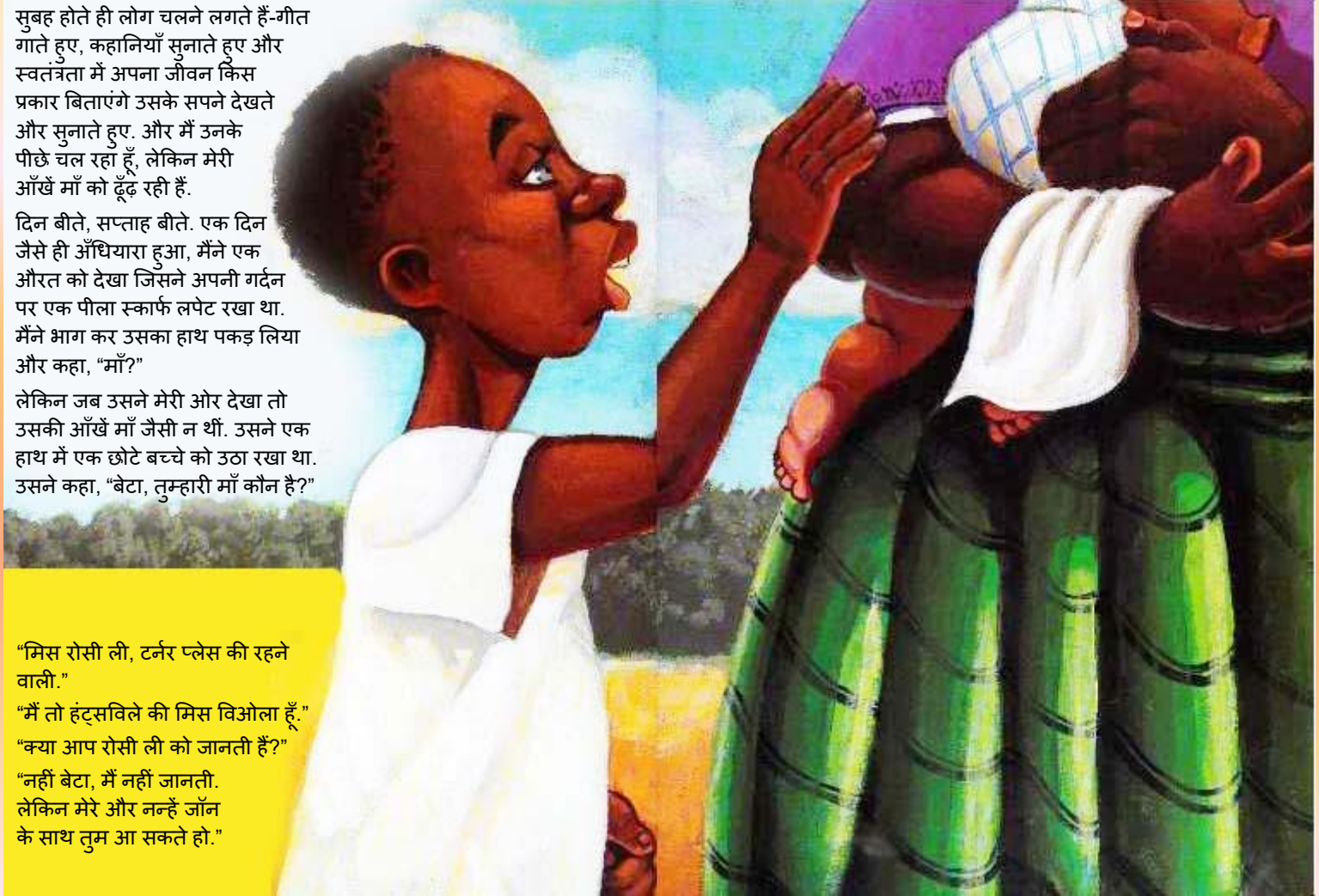

"मिस रोसी ली, टर्नर प्लेस की रहने वाली."

"मैं तो हंट्सविले की मिस विओला हूँ."

"क्या आप रोसी ली को जानती हैं?"

"नहीं बेटा, मैं नहीं जानती. लेकिन मेरे और नन्हें जॉन के साथ तुम आ सकते हो."

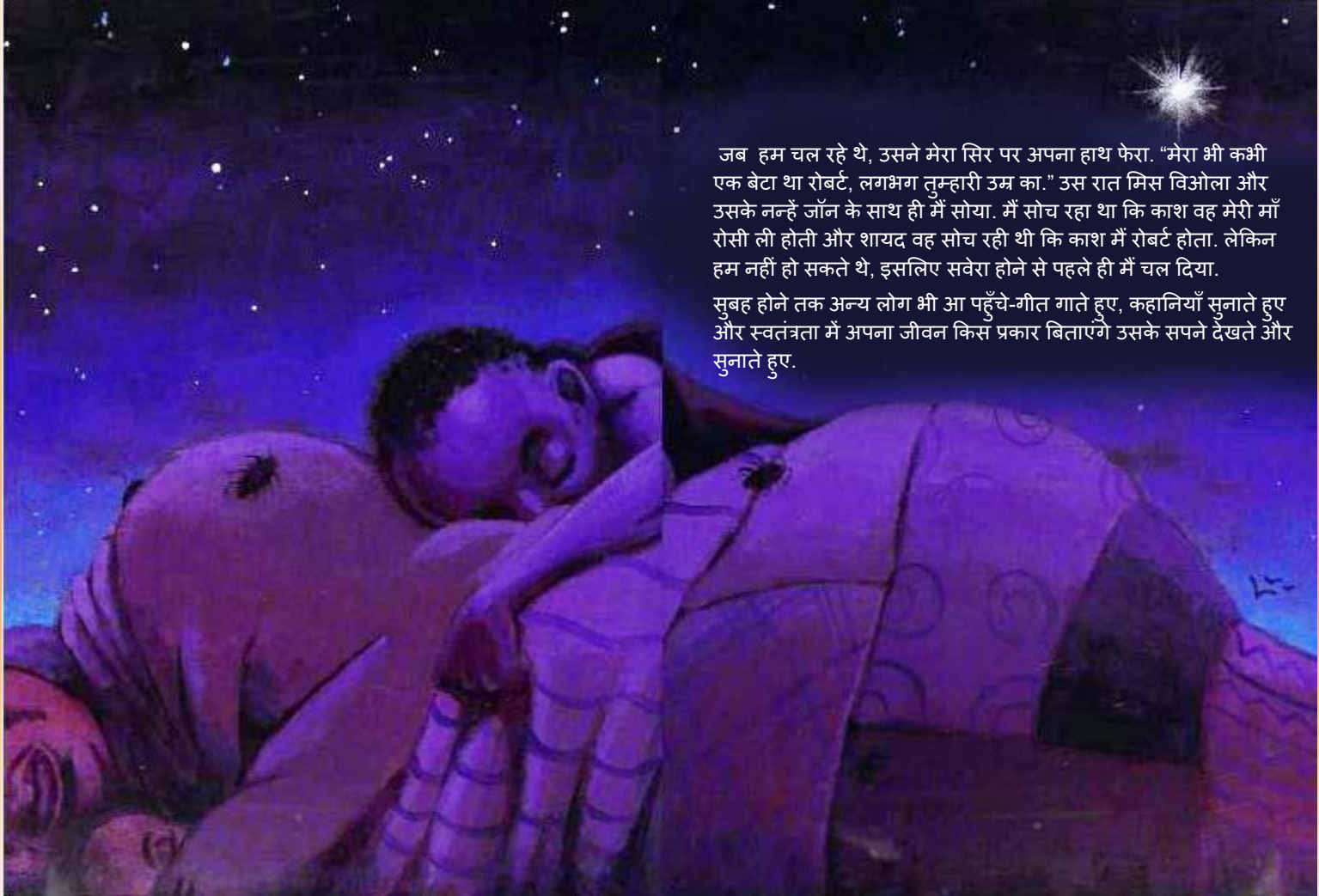

जब हम चल रहे थे, उसने मेरा सिर पर अपना हाथ फेरा. “मेरा भी कभी एक बेटा था रोबर्ट, लगभग तुम्हारी उम्र का.” उस रात मिस विओला और उसके नन्हें जॉन के साथ ही मैं सोया. मैं सोच रहा था कि काश वह मेरी माँ रोसी ली होती और शायद वह सोच रही थी कि काश मैं रोबर्ट होता. लेकिन हम नहीं हो सकते थे, इसलिए सवेरा होने से पहले ही मैं चल दिया.

सुबह होने तक अन्य लोग भी आ पहुँचे-गीत गाते हुए, कहानियाँ सुनाते हुए और स्वतंत्रता में अपना जीवन किस प्रकार बिताएंगे उसके सपने देखते और सुनाते हुए.

मैं पूरा महीना चलता रहा, फिर एक महीना और माँ के बारे में एक शब्द सुनने को न मिला, लेकिन मैंने स्वतंत्र दासों के कार्यालय के बारे में सुना जहाँ खोये हुए लोगों को ढूँढने में सहायता की जाती थी.

मुझे वह कार्यालय मिल गया. वह उतना ही क्लांत और बुरी अवस्था में था जितना मैं. वहाँ दीवारों पर कोई चित्र न लगे थे. सिर्फ शब्द थे, शब्द जो मैं पढ़ न सकता था.

“किसी को ढूँढ़ रहे हो?” वहाँ की महिला ने पूछा.

“हाँ मैडम, अपनी माँ को.”

उसने एक माँ के बारे में बताया जो पाँच बच्चों को ढूँढ़ रही थी, दूसरी जो दो बच्चों को ढूँढ़ रही थी, और ऐसी कई मातायें जो बच्चों को ढूँढ़ रही थीं, वैसे ही जैसे मैं माँ को ढूँढ़ रहा था. लेकिन मेरी माँ को नाम दीवार पर न था. महिला मुझे बाहर ले आई. और स्वतंत्र दासों के अगले कार्यालय का रास्ता बताया.

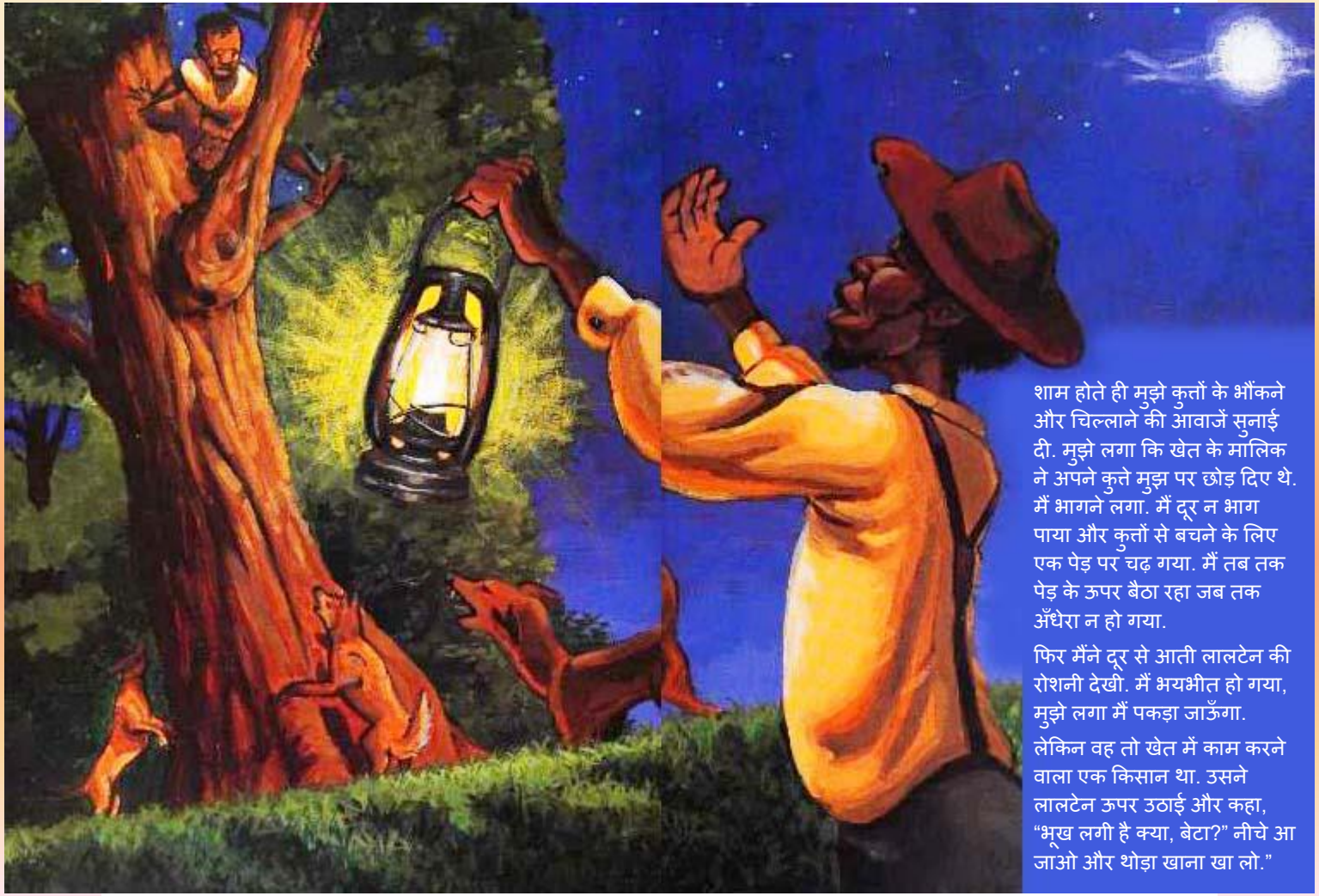

शाम होते ही मुझे कुत्तों के भौंकने और चिल्लाने की आवाजें सुनाई दी. मुझे लगा कि खेत के मालिक ने अपने कुत्ते मुझ पर छोड़ दिए थे. मैं भागने लगा. मैं दूर न भाग पाया और कुत्तों से बचने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया. मैं तब तक पेड़ के ऊपर बैठा रहा जब तक अँधेरा न हो गया.

फिर मैंने दूर से आती लालटेन की रोशनी देखी. मैं भयभीत हो गया, मुझे लगा मैं पकड़ा जाऊँगा.

लेकिन वह तो खेत में काम करने वाला एक किसान था. उसने लालटेन ऊपर उठाई और कहा, “भूख लगी है क्या, बेटा?” नीचे आ जाओ और थोड़ा खाना खा लो.”

महीने भर से मैंने बैठ कर खाना न खाया था. मेरा मन कर रहा था कि प्लेट उठा कर चाट लूँ. लेकिन किसान की बीवी, मिस बैट्टी, रोटी के टुकड़े मुझे देती रही.

मैंने खाना बंद करने की कोशिश की लेकिन पेट मुझे ऐसा नहीं करने दे रहा था, मैंने उन्हें माँ की बनाई स्वीट पाई के बारे में बताया. तभी मिस बैट्टी से कुछ मांगने हेतु एक औरत आई. मेरी बात सुन कर उसने कहा, “क्या तुमने रोसी कहा?”

“रोसी ली,” रोटी के आखिरी टुकड़े को निगलते हुए मैंने कहा.

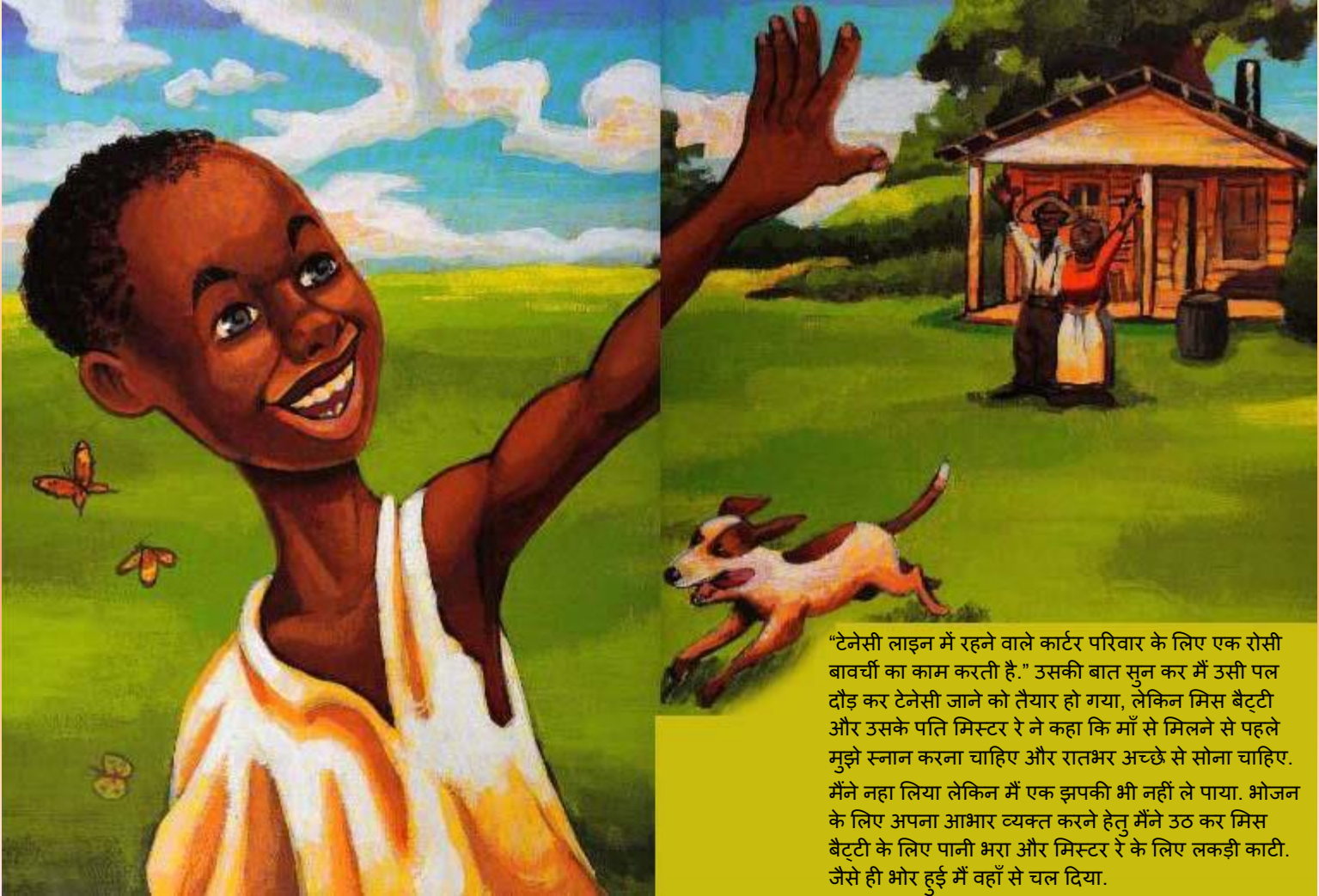

“टेनेसी लाइन में रहने वाले कार्टर परिवार के लिए एक रोसी बावर्ची का काम करती है.” उसकी बात सुन कर मैं उसी पल दौड़ कर टेनेसी जाने को तैयार हो गया, लेकिन मिस बैट्टी और उसके पति मिस्टर रे ने कहा कि माँ से मिलने से पहले मुझे स्नान करना चाहिए और रातभर अच्छे से सोना चाहिए.

मैंने नहा लिया लेकिन मैं एक झपकी भी नहीं ले पाया. भोजन के लिए अपना आभार व्यक्त करने हेतु मैंने उठ कर मिस बैट्टी के लिए पानी भरा और मिस्टर रे के लिए लकड़ी काटी. जैसे ही भोर हुई मैं वहाँ से चल दिया.

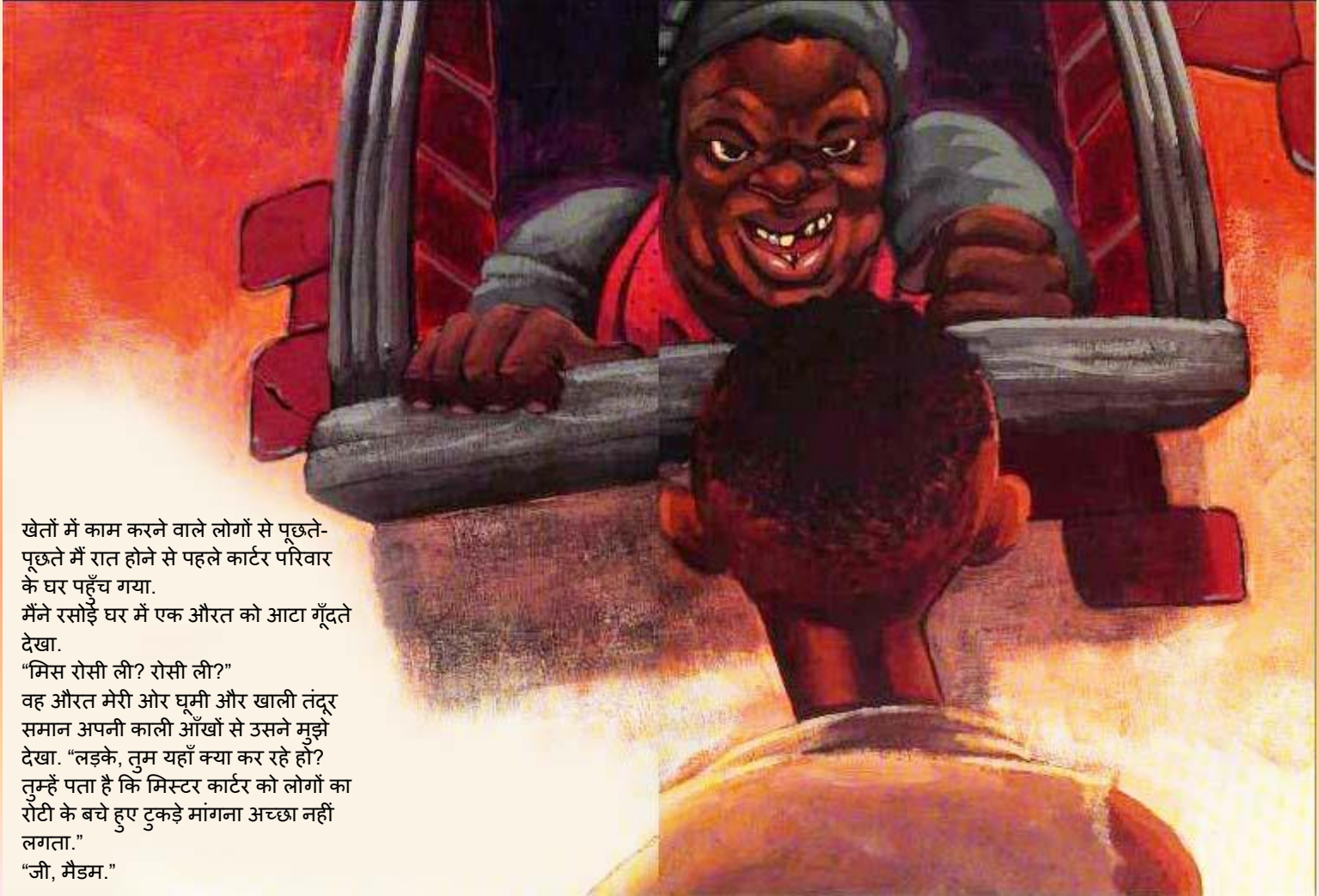

खेतों में काम करने वाले लोगों से पूछते-पूछते मैं रात होने से पहले कार्टर परिवार के घर पहुँच गया.
मैंने रसोई घर में एक औरत को आटा गूँदते देखा.
“मिस रोसी ली? रोसी ली?”
वह औरत मेरी ओर घूमी और खाली तंदूर समान अपनी काली आँखों से उसने मुझे देखा. “लड़के, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हें पता है कि मिस्टर कार्टर को लोगों का रोटी के बचे हुए टुकड़े मांगना अच्छा नहीं लगता.”
“जी, मैडम.”

लड़खड़ता हुआ मैं फिर रास्ते पर आ गया. मैं उस रोसी के लिए रो रहा था जिसे मैं ढूँढ़ न पाया था. जेस्पर में नहीं, चैट्टानूगा में नहीं, न ही किसी ऐसी जगह जहाँ मुझे पता चला कि रोसी नाम की बावर्ची काम कर रही थी.

जब मुझे एक रोसी ली के बारे में पता चल और उसकी खोज में मैं अप्पलाचियन पहाड़ों की ओर आया तब तक दुःख से मैं एक पत्ते से भी पतला हो चुका था. मैं एक नगर पहुँचा जिसका नाम क्लीवलैंड था.

चर्च में एक महिला ने बताया कि एक होटल में रोसी नाम की एक औरत काम करती थी. मैं एक और रोसी से भेंट न करना चाहता था, इस आशंका से कि मेरे बजाय वह किसी और बच्चे की माँ होगी.

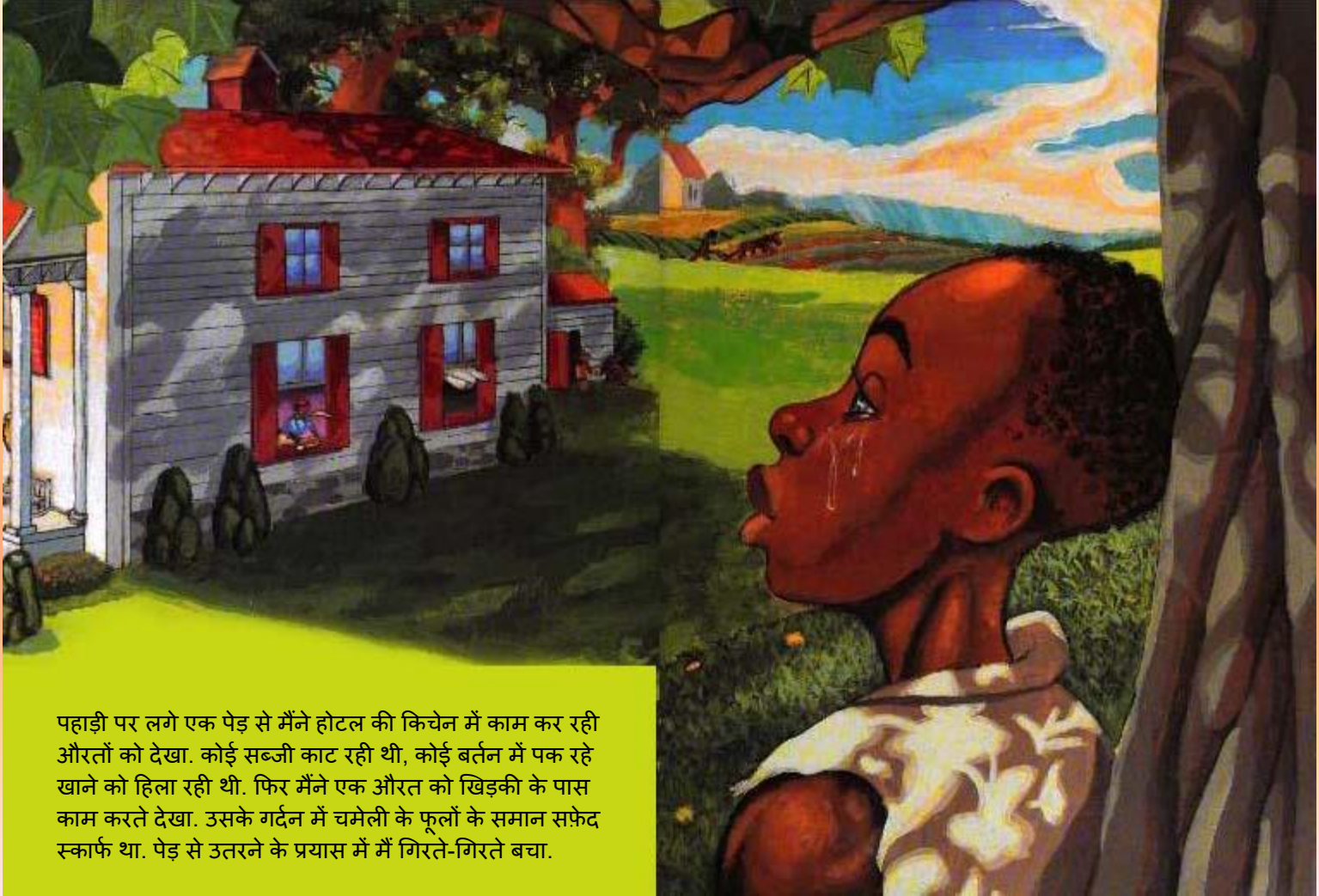

पहाड़ी पर लगे एक पेड़ से मैंने होटल की किचेन में काम कर रही औरतों को देखा. कोई सब्जी काट रही थी, कोई बर्तन में पक रहे खाने को हिला रही थी. फिर मैंने एक औरत को खिड़की के पास काम करते देखा. उसके गर्दन में चमेली के फूलों के समान सफ़ेद स्कार्फ था. पेड़ से उतरने के प्रयास में मैं गिरते-गिरते बचा.

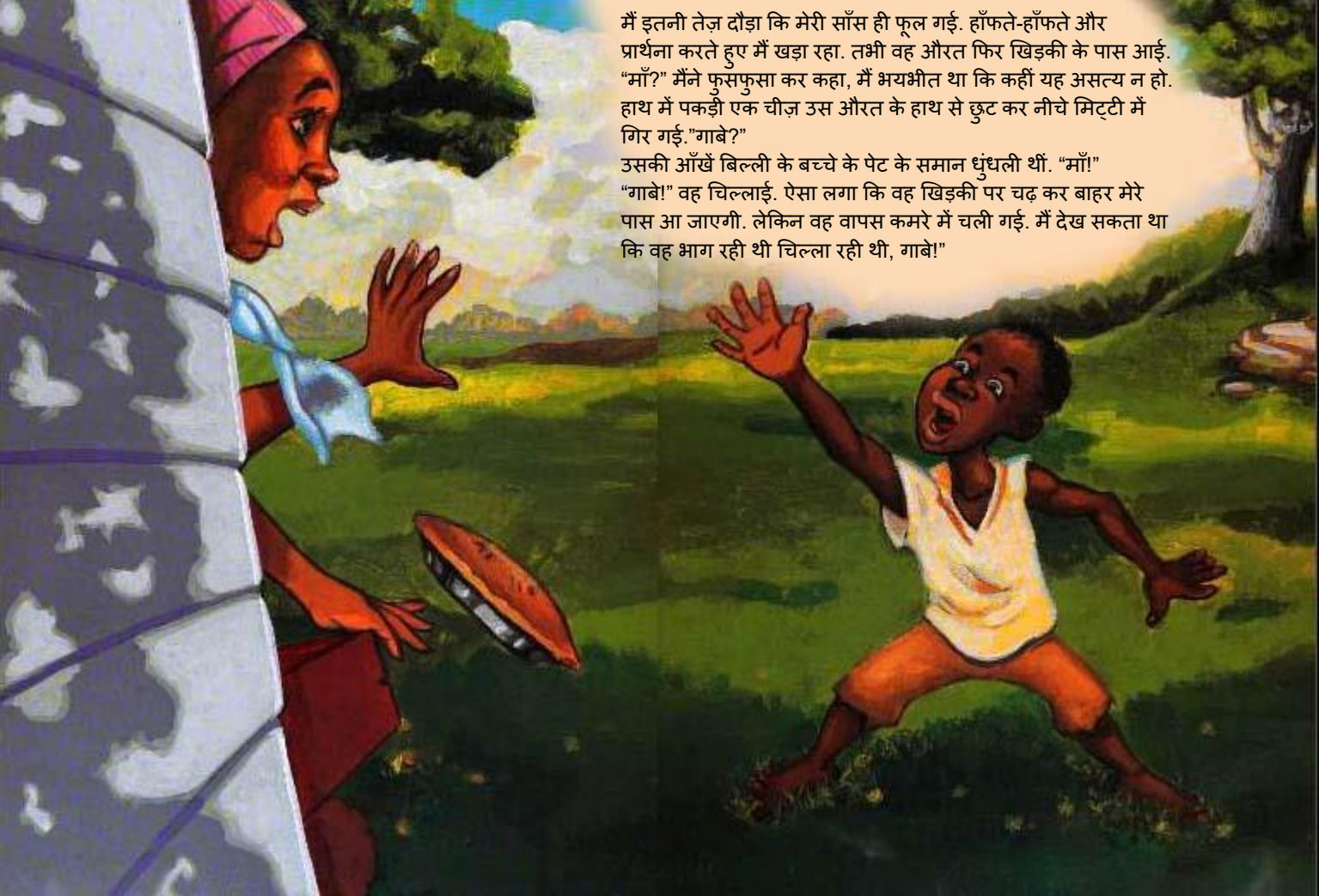

मैं इतनी तेज़ दौड़ा कि मेरी साँस ही फूल गई. हाँफते-हाँफते और प्रार्थना करते हुए मैं खड़ा रहा. तभी वह औरत फिर खिड़की के पास आई. "माँ?" मैंने फुसफुसा कर कहा, मैं भयभीत था कि कहीं यह असत्य न हो. हाथ में पकड़ी एक चीज़ उस औरत के हाथ से छुट कर नीचे मिट्टी में गिर गई."गाबे?"

उसकी आँखें बिल्ली के बच्चे के पेट के समान धुंधली थीं. "माँ!"

"गाबे!" वह चिल्लाई. ऐसा लगा कि वह खिड़की पर चढ़ कर बाहर मेरे पास आ जाएगी. लेकिन वह वापस कमरे में चली गई. मैं देख सकता था कि वह भाग रही थी चिल्ला रही थी, गाबे!"

मैं उसकी ओर भागा. वह दौड़ती हुई सीढ़ियों से नीचे आ रही है. वह मुझे गले लगा रही है, मुझे प्यार कर रही है. मैं उसे गले लगा रहा हूँ, उसे प्यार कर रहा हूँ. हम दोनों ईश्वर का धन्यवाद दे रहे हैं कि उनकी कृपा से हम एक-दूसरे से मिल पाए हैं.

उस रात मैं माँ के साथ सोया, उसके साथ चिपक कर. मैंने उन सब लड़कों के लिए प्रार्थना की जो मेरी तरह अपनी-अपनी माँ को ढूँढ़ रहे हैं. ईश्वर उन्हें अपने घर पहुँचा दें.